आईआईटी का नहीं हुआ कानपुर से मिलन

फुरसत के कुछ लम्हें : 1986 बैच के छात्रों ने आईआईटी में यादें ताजा कीं

शक नहीं कि आईआईटी की प्रतिभा बहुआयामी है। 1986 बैच के एलूमिनाई में भी प्रोफेशनल दक्षता और विजन साफ झलका। चेहरे पर सादगी और बेहद व्यक्तिगत पलों में भी सामाजिक सरोकारों की चर्चा। मैटलर्जी में डॉक्टरेट पर मीडिया में महारथ, ऊँचे पदों को छोड़ कर वेदों में विज्ञान की जमीन खोजने का जज्बा, विकास के खाके को अमली जामा न पहनाने पर प्रशासन के प्रति रोष या फिर शीर्ष ब्यूरोक्रेट होते हुए भी आईआईटी के साथ उद्योग के संबंधों की पैरोकारी। खुला आकाश, खुले विचार। गंभीर चर्चा, हंसी-ठिठोली, गाना, नाचना फिर 'राजकुमार' फिल्म देखना। दुनिया से विदा हो चुके साथियों को श्रद्धांजलि। सबके लिए वक्त था उनके पास

'उद्योगपति पहल करें'

पटना से निक लने वाली पत्रिका 'नईधारा' का संपादक हूँ। जरूरी नहीं कि आईआईटी का हर बंदा इंजीनियरिंग ही करे। आईआईटी वालों के लिए हर क्षेत्र खुला है। तकनीक और पत्रकारिता का संगम कम रोचक नहीं है। ऐसी पत्रिका और जर्नल निकाले जा सकते हैं जिनसे नई पीढ़ी, उद्योग जगत समेत समाज को सीधे फायदा मिले। पत्रिका 'इण्डस्ट्री 2.0' निकाल रहा हूँ। आईआईटी प्रबंधन, प्रदेश सरकार और उद्योगपतियों की पहल हो तो आईआईटी के आस-पास का माहौल सुधर सकता है।

प्रमथराज सिन्हा, फाउंडर और मैनेजिंग डाइरेक्टर, नाइन डॉट नाइन मीडियावर्क्स, दिल्ली

धूल खा रहा सीवेज खाका

'पर्यावरण, ऊर्जा, सोलर सेल ऐसे क्षेत्र हैं जिसमें आईआईटी के स्कॉलर बहुत कुछ कर सकते हैं। वर्तमान में सोलर सेल की क्षमता 20 प्रतिशत का ही दोहन हो पाया है। इससे सौर ऊर्जा का पूरा लाभ नहीं उठाया जा पा रहा। शहर के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं। पर कोई सुनने वाला भी तो हो। शहर के अंडरग्राउंड सीवेज सिस्टम का खाका आईआईटी शहर प्रशासन को बहुत पहले सौंप चुका है। सब ठंडे बस्ते में पड़ा धूल खा रहा है। बताइए, ऐसे में किसको और क्या सुझाव दिए जाएँ।'

मनींद्र अग्रवाल, प्रोफेसर एण्ड हेड डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर एण्ड इंजीनियरिंग, आईआईटी कानपुर

वेद में है स्टीम इंजन का जिक्र

'नौकरी छोड़कर भारतीय वेदों का अध्ययन कर रही हूँ। मुझे लगता है कि वेद में विज्ञान के अध्ययन की तमाम संभावनाएँ हैं। वाष्प (स्टीम इंजन) की ताकत का जिक्र वेद में है। यह भी वर्णित है कि यह विधि टांस्पोर्ट के काम आती थी। यही नहीं वोल्टिक सेल के प्रयोग का वर्णन वेदों में है। मनु के अध्ययन में रामायण काल में तो वायरलेस कम्युनिकेशन की व्यवस्था उजागर होती है। राजा अपने अधीनस्थों से इसी तकनीक से जुड़े रहते थे। मेरी बातों का भटका हुआ करार दिया जा सकता है पर वेदों में हर क्षेत्र में युवाओं के लिए अपार संभावनाएँ हैं।'

उत्तरा नेरूड़कर, स्कॉलर इंडियन फिलोसफी

आईआईटी को फण्ड दें

'शीर्ष शिक्षण संस्थानों में सरकारी सहायता का चलन अब भारत जैसे देशों में ही रह गया है। वक्त आ गया है कि उद्योग घराने और शिक्षण संस्थानों को शोध में एक साथ आगे आएँ। शहर में आईआईटी की स्थापना का मूल कारण ही उद्योगों को बढ़ावा देना था। रिसर्च की फण्डिंग उद्योग घराने करें और लाभ उठाएँ। फिलहाल यह मकसद पूरा नहीं हो रहा। आईआईटी-आईआईएम को भी एक साथ नए प्रयोग करने चाहिए। इस वक्त विकास का सही खाका पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) है। शहर में पर्यटन की संभावना है पर मूल रूप से शहर औद्योगिक ही है।' **देवेश चतुर्वेदी,** डायरेक्टर केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय, दिल्ली